



## परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी (ARC)

drishtiias.com/hindi/printpdf/arc-27

**ARC क्या है?**

- ARC एक विशेष वित्तीय संस्था है जो बैंकों और वित्तीय संस्थाओं से ग्रेर-निधानकारी संपत्तियाँ (NPAs) या खराब संपत्तियाँ खरीदती है जिससे बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को अपनी बैंकें सहायता मिलती है।
- ARC प्रतिभूतीकरण और वित्तीय आस्तियों का पुनर्गठन एवं प्रतिभूति हितों को भारा-3 के तहत पंजीकृत करनी है।
- इस भारतीय बैंक द्वारा एक ग्रेर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी के रूप में विविधता किया जाता है।
- SARFAESI अधिनियम के अनुसार, एक ARC को न्यूनतम 2 करोड़ रुपए की निवल स्वाक्षिप्त निधि रखनी चाहिये जिसे मार्च 2019 तक बढ़ाकर 100 करोड़ रुपए कसा निर्धारित किया गया है।

**पृष्ठभूमि**

- 1998 में नरसिम्हन निधि द्वारा ARCs के गठन का सुझाव दिया गया था।
- 2002 में SARFAESI अधिनियम द्वारा बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को दबावग्रस्त परिसंपत्तियों की बहुली को अनुमति दी गई।
- 2002 में भारतीय स्टेट बैंक, आईडीबीआई और आईसीआईसीआई बैंक द्वारा पहली बार ARCIL नामक ARC का गठन किया गया।
- 2006 में ARCs में 49% विरेसी निवेश की अनुमति प्रदान की गई।
- 2007 से 2017 तक 24 ARCs कार्यरत हैं जिनमें Edelweiss सबसे बड़ी ARC है।

**ARCs को स्थापित करने के उद्देश्य**

NPAs के समाधान संबंधी मुद्रांक पर व्यापक दबावग्रस्त प्रदान करने के लिये ARCs का गठन किया गया, इनके प्रमुख कार्य हैं—

- वित्तीय प्रणाली से NPAs को अलग करना।
- वित्तीय प्रणाली को अपनी मुख्य गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिये स्वतंत्र रखना।
- संकटग्रस्त आस्तियों के लिये एक बाजार के विकास को सुधारना।

**आगे की राह**

- सेवी द्वारा स्ट्रेट एक्सेजेंस पर ARCs द्वारा जारी प्रतिभूति रसीदों की अनुमति दिये जाने से ARCs को लाभ निकलने की उम्मीद है।
- संकटग्रस्त परिसंपत्तियों के बाजार में बैंकों पूर्वी के प्रबाह के साथ ARCs अधिक जोखिम लेने और बहुत बोली लागत में सहम होंगे।
- समाधान उद्योग समेकन व एफडीआई मार्ग के खुलने तथा दिवालियापान सहित की स्थापना के साथ ARCs अब वास्तविक कायाकल्प विशेषज्ञ के रूप में परिवर्तित हो जाएंगे, जो कि समय की मांग है।

**ARCs की कार्यविधि**

- SARFAESI अधिनियम के तहत कोई बैंक मूल्य कटौती के लिये डालता है, जिस सबौधिक बोली लागे अर्कों को बेचा जाता है।
- ARCs इन आस्तियों को नकद या प्रतिभूति रसीद (SRs) या 'होप नोट्स' (जिसको ऋणप्राप्त वसूली पर निर्भर है) के द्वारा अधिगृहीत करती हैं।
- प्रतिभूति रसीदों (SRs) को खराब आस्तियों का समर्थन होता है। अतः कोई निविच्छन नकद प्रवाह नहीं होता है।
- एक ARC परिशेषन/निपटन/पुरांगठन या युनवास सहित आस्तियों की बहुली के लिये विविध मात्रा पर विचार करती है और कंपनी का बैंक एवं परिचालन नकद प्रवाह से भुलान सुनिश्चित करने के लिये बदलाव करती है।
- यदि वहाँ कोई लाभ होता है तो उसे प्रतिभूति रसीद धारकों के अनुसार वितरित किया जाता है।

**ARCs के मुख्य घुटनेतारीक**

- मूल्य निर्धारण: ARCs और विक्रेता संस्थाओं के बीच बेमेल मूल्य निर्धारण से ARCs द्वारा धारित आस्तियों की कीमतें बढ़ जाती हैं।
- पूर्वी अपवाहनता: अप्रैल 2014 में अग्रिम नकद घटक 15% तक बढ़ने के साथ ARCs का वर्तमान शुद्ध मूल्य कंक्रेट 33,300 करोड़ रुपए की संकटग्रस्त आस्तियों को प्राप्त करने के लिये पर्याप्त होगा।
- प्रतिभूति रसीदों के लिये परिपक्व द्वितीयक बाजार का अधार: परिपक्व द्वितीयक बाजार के अधार में बैंक अपनी खुद की संकटग्रस्त आस्तियों द्वारा समर्थित प्रतिभूति रसीदों को खरीदने के लिये मजबूर हैं।
- अंतर-लेनदारों के मुद्राएँ: अंतर-लेनदारों के मुद्राएँ के कारण उचित समाधान राशीतारीकों के क्रियावश्यन में वाधा आती है।
- लावे समाधान: विवेक बैंक को इंडिग विजनेस, 2018 की रिपोर्ट के अनुसार दिवालियापान के संदर्भ में भारत 212 देशों में 174 वें स्थान पर है। यहाँ किसी भी समाधान में औसतन 4.3 वर्ष लगते हैं।
- विविधायक बाधाएँ: ARCs नियामकों की जाँच के अधीन हैं और कुछ विनियमों ने उनकी वृद्धि और व्यवहार्यता में वाधा डाली है।